## नं. १६६ सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | गा. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भा. | स. | संज्ञि | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ मि. सा. अ. | १ सं. अ. | ६ अप. | ७ | ४ | १ दे. | १ पंचे. | १ त्रस. | २ वै. मि. कार्म. | २ स्त्री. पु. | ४ | ५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव. | १ असं. | ३ केद. विना. | द्र. २ का. शु. भा. १ तेज. | २ भा. अ. | ५ औप. क्षा. क्षायो. मिथ्या. साका. | १ सं. | २ आहा. अना. | २ साका. अना. |

सोधम्मीसाणदेव-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा१ (प्रतिषु 'दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा' इति पाठ ;), भावेण

मज्झिमतेउलेस्सा; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१६७।

नं. १६७ मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | इा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संइि ा | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मि. | २ सं. प. सं. अ. | ६ प. ६ अ. | १० ७ | ४ | १ दे. | १ पंचे. | १ त्रस. | ११ म. ४ व. ४ वै. २ का. १ | २ स्त्री. पु. | ४ | ३ अइा. | १ असं. | २ चक्षु. अच. | द्र. ३ का. शु. ते भा. १ तेज. | २ भ. अ. | १ मि. | १ सं. | २ आहा. अना. | २ साका. अना. |

--------------------------------

संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों

प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

--------------------------------

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१६८।

## नं. १६८ मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मि. | १ सं. प. | ६ प. | १० | ४ | १ दे. | १ पंचे. | १ त्रस. | ९ म. ४ व. ४ वै. १ | २ स्त्री. पु. | ४ | ३ अज्ञा. | १ असं. | २ चक्षु. अच. | द्र. १ भा. १ तेज. | २ भ. अ. | १ मि. | १ सं. | १ आहा. | २ साका. अना. |

तेसिं चेवं अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं,

--------------------------------

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

--------------------------------

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१६९।

### नं. १६९ मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मि. | १ सं. अ. | ६ अ. | ७ | ४ | १ दे. | १ पंचे. | १ त्रस. | २ वै.मि. कार्म. | २ स्त्री. पु. | ४ | २ कुमा. कुश्रु. | १ असं. | २ चक्षु. अच. | द्र. २ का. शु. मा १ तेजो. | २ भ. अ. | १ मि. | १ सं. | २ आहार अनाहार | २ साकार अनाकार |

सोधम्मीसाण-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ सुक्क-मज्झिमतेउलेस्साओ, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिध्दिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१७०।

नं. १७० सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ सासा. | २ सं. प. | ६ प. ६ | १० ७ | ४ | १ दे. | १ पंचे. | १ त्रस. | ११ म. ४ व. | २ स्त्री. | ४ | ३ अज्ञा | १ असं. | २ चक्षु. | द्र. ३ का. | १ भ. | १ सासा. | १ सं. | २ आहा. | २ साका. |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | सं. अ. | अ. | | | | | | ४ वै. २ का. १ | पु. | | . | | अच. | शु. ते. भा. १ तेज. | | | | अना. | अना. |

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ,

--------------------------------

सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर - एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिध्दिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

--------------------------------

णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिध्दिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१७१।

## नं. १७१ सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | इा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १<br>सा. | १<br>सं.प. | ६<br>प. | १० | ४ | १<br>दे. | १<br>पंचे. | १<br>त्रस. | ९<br>म. ४<br>व. ४<br>वै. १ | २<br>स्त्री.पु. | ४ | ३<br>अइा. | १<br>असं. | २<br>चक्षु.<br>अच. | द्र. १<br>तेज.<br>भा. १<br>तेज. | १<br>भ. | १<br>सासा. | १<br>सं. | १<br>आहार | २<br>साकार<br>अनाकार |

## नं. १७२ सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | इा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १<br>सा. | १<br>सं.अ. | ६<br>अप. | ७ | ४ | १<br>दे. | १<br>पंचे. | १<br>त्रस. | २<br>वै.मि.<br>क | २<br>स्त्री.पु. | ४ | २<br>कुम.<br>कुश्रु | १<br>असं. | २<br>चक्षु.<br>अ | द्र. २<br>का.<br>शु. | १<br>भ. | १<br>सा. | १<br>सं. | २<br>आहार<br>अ | २<br>साकार |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | ार्म<br>. | | | . | | च<br>. | भा.<br>१<br>ते<br>ज. | | | | ना<br>हा<br>र | अ<br>ना<br>क<br>ार |

१७२तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिध्दिया, सासणसम्मत्तं,

-------------------------------

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिध्दिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम

-------------------------------

सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

सोधम्मीसाण-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दसपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिध्दिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१७३।

नं. १७३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | गा. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भा. | स. | संज्ञि | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ सम्य. | १ सं.प. | ६ प. | १० | ४ | १ दे. | १ पंचे. | १ त्रस. | ९ म.४ व.४ वै.१ | २ स्त्री.पु. | ४ | ३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र. | १ असं. | २ चक्षु. अच. | द्र. १ ते. भा. १ तेज. | १ भा. | १ सम्य. | १ सं. | १ आहार | २ साकार अनाकार |

सोधम्मीसाण-असंदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी,

तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्साओ, भावेण

--------------------------------

तेजोलेश्या; भव्यसिध्दिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके आलाप कहनेपर--- एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिध्दिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाए, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या;

--------------------------------

मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिध्दिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१७४।

### नं. १७४ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी | प | प्रा | सं | ग | इं | क | यो. | वे. | क | ज्ञ | सं | द. | ले | भ | स | सं | अ | उ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | . | . | . | . | ा. | . | ा. | | | . | ा | य. | | . | ा. | . | ज्ञि | ा. | . |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | . | | | | | | ा | | |
| १<br>अ<br>वि<br>. | २<br>सं<br>.<br>प.<br>सं<br>.<br>अ. | ६<br>प<br>.<br>६<br>अ<br>. | १<br>०<br>७ | ४ | १<br>द<br>ॅ. | १<br>प<br>ं च<br>ो<br>. | १<br>त्र<br>स<br>. | ११<br>म.<br>४<br>व.<br>४<br>वै.<br>२<br>का<br>. १ | २<br>स्त्र<br>ी.<br>पु. | ४ | ३<br>म<br>ति<br>.<br>श्रु<br>त.<br>अ<br>व. | १<br>अ<br>सं<br>. | ३<br>के<br>द.<br>वि<br>ना<br>. | द्र.<br>३<br>क<br>ा.<br>शु<br>.<br>ते<br>.<br>भा<br>.<br>१<br>ते<br>ज<br>. | १<br>ॽ<br>ा. | ३<br>अ<br>ौप<br>.<br>क्षा<br>.<br>क्षा<br>यो<br>. | १<br>सं<br>. | २<br>अ<br>ाह<br>ार<br>अ<br>ना<br>हा<br>र | २<br>स<br>ाक<br>ा<br>र<br>अ<br>ना<br>क<br>ार |

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी पंचिदियजादि, तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिध्दिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१७५ ।

नं. १७५ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी<br>. | प<br>. | प्रा<br>. | सं<br>. | ग<br>ा. | इं<br>. | क<br>ा. | यो<br>. | वे. | क<br>. | ज्ञा. | सं<br>य. | द. | ले<br>. | भ. | स<br>. | सं<br>ज्ञि<br>ा | आ<br>ा. | उ<br>. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ अवि. | १ सं. प. | ६ प. | १० | ४ | १ दे. | १ पंचो. | १ त्रस. | ९ म. ४ व. ४ वै. १ | २ स्त्री. पु. | ४ | ३ मति. श्रुत. अव. | १ असं. | ३ केद. विना. | द्र. १ तेज. भा. १ तेज. | १ भ. | ३ औप. क्षा. क्षायो. | १ सं. | १ आहार | २ साकार अनाकार |

--------------------------------

भव्यसिध्दिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नंपुसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिध्दिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

--------------------------------

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादि, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झि

ामा तेउलेस्सा; भवसिध्दिया, तिण्णि सम्मत्ताणि। देवासंजदसम्माइट्ठीणं कधमपज्जतकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि? वुच्चदे-वेदगसम्मत्तमुवसामिय उवसमसेढिमारुहिय पुणो ओदरिय पमत्तापमत्तसंजद-असंजद-संजदासंजद-उवसमसम्माइट्ठि-ट्ठाणेहि मज्झिम-तेउलेस्सं परिणामिय१ (मु. परिणमिय।) कालं काऊण सोधम्मीसाण-देवेसुप्पण्णाणं अपज्जत्तकाले उवसमसमत्तं लब्भदि। अध ते चेव उक्कस्स-ते उलेस्सं वा जहण्ण-पम्मलेस्सं वा परिणामिय जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह सणक्कुमार-माहिंदे उप्पज्जंति। अध ते चेव उवसमसम्माइट्ठिणो मज्झिम-पम्मलेस्सं परिणामिय२ (मु. परिणमिय कालं ।) जदि कालं करेंति तो बंभ बंभुत्तर-लांतव-काविट्ठ-सुक्क-महासुक्केसु उप्पज्जंति। अध उक्कस्स-पम्मलेस्सं वा जहण्ण-सुक्कलेस्सं वा परिणामिय जदि ते कालं करेंति ते उवसमसम्मत्तेण सह सदार-सहस्सारदेवेसु

--------------------------------

उन्ही असंयत सम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिध्दिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं।

शंका --- असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त कालमें औपशमिक सम्यक्त्व कैसे पाया जाता है?

समाधान --- वेदकसम्यक्त्वको उपशमा करके और उपशमश्रेणी पर चढकर फिर वहांसे उतर कर प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, असंयत और संयतासंयत, उपशमसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंसे मध्यम तेजोलेश्याको परिणमा कर और मरण करके सौधर्म ऐशान कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है। तथा, उपर्युक्त गुणस्थानवर्ती ही जीव उत्कृष्ट तेजोलेश्याको अथवा जघन्य पद्मलेश्याको परिणमा कर यदि मरण

करते हैं, तो औपशमिक सम्यक्त्वके साथ सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्पमें उत्पन्न होते हैं। तथा, वे ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीव मध्यम पद्मलेश्याको परिणमा कर यदि मरण करते हैं, तो ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ट, शुक्र और महाशुक्र कल्पोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, वे ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीव उत्कृष्ट पद्मलेश्याको अथवा जघन्य शुक्ललेश्याको परिणमा कर यदि

--------------------------------

उप्पज्जंति अध उवसमसेढिं चढिय पुणो१ (मु. पुणोदिण्णा । ) अणोदिण्णा चेव मज्झिम-सुक्कलेस्साए परिणदा संता जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह आणदं-पाणद-आरणच्चुद-णवगेवज्जविमाणवासिय-देवेसुप्पज्जंति। पुणो ते चेव उक्कस्स-सुक्कलेस्सं परिणामिय जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह णवाणुदिस-पंचाणुत्तरविमाण देवे-सुप्पज्जंति। तेण सोधम्मादि-उवरिम-सव्वदेवासंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले उव-समसम्मत्तं लब्भदि त्ति। सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१७६।

नं. १७६ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ अवि. | १ सं.अ. | ६ अप. | ७ | ४ | १ दे. | १ पंचे. | १ त्रस. | २ वै.मि. कार्म. | १ पु. | ४ | ३ मति. श्रुत. अव. | १ असं. | ३ के.द. विना. | द्र. २ का. शु. भा. १ | १ भ. | ३ औप. क्षा. क्षायो. | १ सं. | २ आहार अनाहार | २ साकार अनाकार |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | ते<br>ज<br>. | | | | | |

एवमित्थि पुरिसवेदाणमोघालावे समत्तो।

एवं चेव पुरिसवेद-देवाणमालावो वत्तव्वो। णवरि जत्थ दो वेदा वुत्ता तत्थ पुरिसवेदो एक्को चेव वत्तव्वो। एवं सोधम्मीसाणदेवीणं पि वत्तव्वं। णवरि जत्थ

--------------------------------

मरण करते हैं, तो औपशमिकसम्यक्त्वके साथ शतार, सहस्त्रार कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, उपशमश्रेणी पर चढ करके और पुन: उतरे विना ही मध्यम शुक्ललेश्यासे परिणत होकर यदि मरण करते है तो उपशमसम्यक्त्वके साथ आनत, प्राणत, आरण, अच्युत और नौ ग्रैवेयकविमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, पूर्वोक्त उपशम सम्यग्दृष्टि जीव ही उत्कृष्ट शुक्ललेश्याको परिणमा कर यदि मरण करते हैं, तो उपशमसम्यक्त्वके साथ नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर-विमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। इस कारण सौधर्म स्वर्गसे लेकर ऊपरके सभी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है।

सम्यक्त्व आलापके आगे - संज्ञी, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इस प्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भेद न करके सौधर्म और ऐशान स्वर्गके देवोंके सामान्य आलाप समाप्त हुए।

सौधर्म ऐशान कल्पके देवोंके सामान्य आलापोंके समान ही पुरुषवेदी देवोंके आलाप कहना चाहिये। विशेषता यह है कि सामान्य आलाप कहते समय जहांपर पहले स्त्रीवेद और पुरुषवेद ये दो वेद कहे गये हैं, वहांपर केवल एक पुरुषवेद ही कहना चाहिये। इसी प्रकार सौधर्म ऐशान स्वर्गकी देवियोंके आलाप कहना चाहिये। विशेषता यह है कि

--------------------------------

पुरिसवेदो वुत्तो तत्थ इत्थिवेदो चेव वत्तव्वो। असंजदसम्माइट्ठिस्स इत्थिवेदम्हि उप्पत्ति णत्थि त्ति तस्स पज्जत्तालावो एक्को चेव वत्तव्वो। पज्जत्तालावे उच्चमाणे वि खइयसम्मत्तं णत्थि त्ति वत्तव्वं, देवेसु दंसणमोहणीयस्स खवणाभावादो। एत्तिओ चेव विसेसो।

सणक्कुमार-माहिंददेवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवमासा, छपज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादि, तसकाओ , एगारह जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सतेउ१ (प्रतिषु 'उक्कस्सतेउ' इति पाठो नास्ति । ) - जहण्णपम्म लेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१७७ ।

नं. १७७ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी. | प. | प्रा. | सं. | गा. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भा. | स. | संज्ञि | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ मि. सा. स. अ. | २ सं. प. सं. अ. | ६ प. ६ अ | १० ७ | ४ | १ दे. | १ पंचे. | १ त्रस | ११ म. ४ व. ४ वै. २ क | १ पु. | ४ | ६ ज्ञान. ३ अज्ञा. ३ | १ असं. | ३ के.द. विना. | द्र. ४ का. शु. ते. प. | २ भ. अ. | ६ | १ सं. | २ आहार अनाहार | २ साकार अनाकार |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | ा.<br>१ | | | | | | भा<br>.<br>२<br>ते<br>.<br>उ<br>.<br>प.<br>ज<br>. | | | | | |

--------------------------------

पुरुषवेदी देवोंके आलापोंमें जहां पुरुषवेद कहा गया है वहां केवल स्त्रीवेद ही कहना चाहिए। यहां इतना और समझना चाहिये कि असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंकी उत्पत्ति नहीं होती है, इसलिये स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टिका एक पर्याप्त-आलाप ही कहना चाहिए। और पर्याप्त-आलाप कहते समय भी क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है, अर्थात् स्त्रीवेदी पर्याप्तोंके( देवियोंके) दो ही सम्यक्त्व होते हैं, ऐसा कहना चाहिए; क्योंकि, देवोंमें दर्शनमोहनीय कर्मके क्षपणका अभाव है। सौधर्म और ऐशानके पुरुषवेदी और स्त्रीवेदी आलापोंमें उनके सामान्य आलापोंसे इतनीही विशेषता है।

सनत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गोकें देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां; छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट पीत और

--------------------------------

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादि, तसकाओ, णव जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वभावेहि उक्कस्स-तेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१७८।

नं. १७८ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ मि. सा. स. अ. | १ सं. प. | ६ प. | १० | ४ | १ दे. | १ पंचे. | १ त्रस. | ९ म. ४ व. ४ वै. १ | १ पु. | ४ | ६ ज्ञान. ३ अज्ञा. ३ | १ असं. | ३ के. द. विना. | द्र. २ ते. उ. प. ज. भा. २ ते. उ | २ भ. अ. | ६ | १ सं. | १ आहार | २ साकार अनाकार |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | .<br>प.<br>ज<br>. | | | | | |

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउसुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ;

--------------------------------

जघन्य पद्मलेश्या; भावसे उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट तेजोलेश्यां और जघन्य पद्मलेश्यां; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान तथा आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे

कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्मलेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

--------------------------------

भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणी अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१७९।

## नं. १७९ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके अपर्याप्त आलाप

| गु | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ मि. सा. अ. | १ सं. अ. | ६ अप. | ७ | ४ | १ दे. | १ पंचे. | १ त्रस. | २ वै.मि. कार्म. | १ पु. | ४ | ५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव. | १ असं. | १ के.द. विना. | द्र. २ का. शु. भा. २ ते. उ. प. | २ भ. अ. | ५ औप. क्षा. क्षायो. मि. सासा. | १ सं. | २ आहार अनाहार | २ साकार अनाकार |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | ज . | | | | | |

संपधि मिच्छाइट्ठिप्पहुडिं जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ताव चदुण्हं गुणट्ठाणाणं सोधम्म-भंगो। णवरि उवरि सव्वत्थ इत्थिवेदो णत्थि, पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो। ओघालावे भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ। भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्म-लेस्साओ। तेसिं चेव अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ१ (मु. लेंस्साओ त्ति चेव) एत्तिओ चेव विसेसो।

बह्म-बम्हुत्तर-लांतव-कापिट्ठ-सुक्क-महासुक्ककप्पदेवाणं सणक्कुमार-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमपम्मलेस्साओ, भावेण मज्झिमा पम्मलेस्सा। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा पम्मलेस्सा। अपज्जत्तकाले

--------------------------------

सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक चारों गुणस्थानोंके आलाप सौधर्म देवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेषता केवल इतनी है कि ऊपर सभी कल्पोंमें स्त्रीवेद नहीं है, अत: एक पुरुषवेद ही कहना चाहिये। उसमें भी ओघालाप कहते समय द्रव्यसे कापोत, शुल्क, उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं कहना चाहिए। भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं कहना चाहिए। पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्मलेश्याएं होती हैं, इतनी विशेषता है।

ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, लान्तव-कापिष्ठ और शुक्र महाशुक्र कल्पवासी देवोंके आलाप सानत्कुमार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहनेपर---

द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम पद्म लेश्या होती है, तथा भावसे केवल मध्यम पद्म लेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम पद्म लेश्या होती हैं।

--------------------------------

दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा पम्मलेस्सा। एत्तियमेत्तो चेव विसेसो। सदारसहस्सारकप्पदेवाणं बम्हलोग-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। आणद-पाणद-आरणच्चुद-सुदंसण-अमोघ-सप्पबुध्द-जसोधर-सुभद्द१ (मु. सुबुध्द ।)-सुविसाल-सुमणस-सउमणस-पीदिं-करमिदि एदेसिं चदुणव-कप्पगेवेज्जाणं सदार-सहस्सार-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमसुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा सुक्कलेस्सा। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा।

( २ अच्ची य अच्चीमालिणी वइरे वइरोयणा अणुद्दिसगा। सोमो य सोमरुवे अंकेफलिकेय आइच्चे।। त्रि. सा. ४५६. तत्रानुदिशविमानानि येष्वेक एवाऽऽदित्यो नाम विमानप्रस्तार:। तत्र दिक्षु विदिक्षु चत्वारि चत्वारि श्रेणिविमानानि। प्राच्यां दिशि अर्चिर्विमानम्, अपाच्यामर्चिमाली, प्रतीच्यां वैरोचनम्, उदीच्यां प्रभासं, मध्ये आदित्याख्यम्। विदिक्षु पुष्पप्रकीर्णकानि चत्वारि। पूर्वदक्षिणस्यामर्चिप्रभम्। दक्षिणापरस्याम् अर्चिर्मध्यम्। अपरोत्तरस्याम् अर्चिरावर्तम। उत्तरपूर्वस्यामर्चिर्विशिष्टम। त. रा. वा. पृ. १६७ श्वेताम्बरग्रंथेषु अनुदिशविमानानामुल्लेखो नास्ति।) २ अच्चि- अच्चिमालिणी-वइर-वइरोयण-सोम-सोमरुव-अंक-फलिह-आइच्च-

--------------------------------

उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या तथा भावसे मध्यम पद्म लेश्या होती है। इतनी मात्रही विशेषता है।

शतार और सहस्त्रार कल्पवासी देवोंके आलाप ब्रह्मलोकके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि उनके सामान्यसे आलाप कहनेपर--- द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, उत्कृष्ट, पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल

लेश्याएं होती हैं। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं।

आनत-प्राणत, आरण अच्युत तथा सुदर्शन, अमोघ, सुप्रबुध्द, यशोधर, सुभद्र, सुविशाल, सुमनस्, सौमनस और प्रीतिंकर इन चार कल्पों और नौ ग्रैवेयक इस प्रकार तेरह कल्पोंके आलाप शतार-सहस्त्रार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिये। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहनेपर--- द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम शुक्ल लेश्या होती है। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा भावसे मध्यम शुक्ल लेश्या होती है।

अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरुप, अंक, स्फटिक, आदित्य, इन

--------------------------------

विजय-वइजयंत-जयंत-अवराइद-सव्वट्ठसिध्दि त्ति एदेसिं णव-पंच-अणुदिसाणुत्तराणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्ससुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिध्दिया, तिण्णि सम्मत्ताणि सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१८०।